म.प्र. सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान

(भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, मानव विकास संसाधन मंत्रालय,
भारत सरकार का एक स्वायत्त शोध संस्थान)

6, प्रोफेसर रामसखा गौतम मार्ग, भरतपुरी प्रशासनिक प्रक्षेत्र, उज्जैन (म. प्र.) 456010

राष्ट्रीय सेमिनार

आचार्य जे.बी. कृपलानीः जीवन, दृष्टि एवं स्वतंत्रता संग्राम से लेकर लोकतान्त्रिक भारत में भूमिका

(Acharya J. B. Kripalani: Life, Vision and Role in Indian Freedom Struggle to Democratic India)

(दिसम्बर 14–15, 2017)

प्रायोजक – राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद्, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

आचार्य जीवटराम भगवानदास कृपलानी (1888–1982) ने स्वतंत्रता के पूर्व एवं पश्चात् भारतीय राजनीति पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है। वे अपने छात्र जीवन से राष्ट्रवादी राजनीति से जुड़े रहे हैं। विल्सन कॉलेज, बाम्बे, डी.जे.सिंह कॉलेज करांची, फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे एवं मुम्बई विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् उन्होंने वर्ष 1912–17 तक मुजफ्फरपुर एवं 1919–20 के मध्य बनारस के एक महाविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। इसके पश्चात् उन्होंने पाँच वर्षों तक महात्मा गांधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ में प्राचार्य के रूप में अपनी सेवाएँ दी। यहीं से उन्हें आचार्य कहा जाने लगा।

मार्च, 1915, में शान्ति निकेतन में महात्मा गांधी से पहली मुलाकात उनके जीवन का निर्णायक मोड़ था। उसके पश्चात् 1917 में चम्पारण सत्याग्रह के दौरान गांधीजी से पुनः मुलाकात के पश्चात् वे गांधीजी के कार्यों एवं विचारों से प्रभावित होकर उनकी ओर आकर्षित हुए और गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रवादी आन्दोलन में पूरी तरह सम्मिलित हो गये। उनके स्वयं के शब्दों में "वे दूसरों के लिए अधिक आधुनिक एवं समझने योग्य गांधी के विचारों के विनम्र व्याख्याकार थे।"

आचार्य कृपलानी 1934–45 के मध्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महासचिव रहे और नवम्बर, 1946 में अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसके पश्चात् तुरन्त ही उन्होंने अपने सहयोगियो के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण इस पद से त्यागपत्र दे दिया। 1951 में उन्होंने कांग्रेस पार्टी को भी छोड़ दिया और एक नयी पार्टी 'किसान मज़दूर प्रजा पार्टी' का गठन किया जो कि बाद में समाजवादी पार्टी में विलय होकर प्रजा समाजवादी पार्टी बनी। वे प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा लगाये गये आपातकाल के दृढ़ आलोचक थे। उन्होंने जयप्रकाश नारायण के साथ, जनता पार्टी के गठन एवं 1977 में उसकी विजय में सहयोग किया।

आचार्य कृपलानी ने गांधी एवं गांधी दर्शन के बारे में कुछ विचारोत्तेजक पुस्तके भी लिखी है, जैसे *गांधीः हिज़ लाइफ एण्ड थॉट्स, द गांधीयन वे एण्ड गांधीः दि स्टेट्समैन,* जो कि उनके मौलिक दृष्टिकोण एवं उच्च बौद्विक गुणवत्ता को प्रदर्शित करती है। 1950 में उन्होनेआर्थिक एवं सामाजिक मुद्दों एवं गाांधी के विचारों के बारे में जागरूकता का प्रसार करने के लिए "विजिल" नामक एक साप्ताहिक भी प्रारम्भ किया। भारत के सामाजिक–आर्थिक उत्थान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, मूल्यों एवं नीतिगत सिद्धान्तों पर उनका असमझौतावादी रूख, गरीबों एवं बेरोजगारों के प्रति गहरी चिन्ता एवं सार्वजनिक जीवन में उच्च मूल्यों पर बल देने के साथ उनकी अदम्य बुद्धि एवं तीव्र अभिव्यक्ति की विशेषता उन्हें एक अलग व्यक्तित्व प्रदान करती थी।

आचार्य कृपलानी गांधीजी के सहयोगी, भारतीय स्वतत्रता संग्राम के भागीदार एवं विश्लेषक तथा एक तीक्ष्ण दिमाग वाले स्वतन्त्र विचारक एवं लेखक होने के साथ–साथ सार्वजनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे जिन्होंने लोकतान्त्रिक विरोध के उच्च नैतिक मानदण्डों को स्थापित किया था। उन्होंने न केवल स्वतन्त्रता संग्राम में अपितु स्वंतन्त्र भारत में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस महान राजनीतिक कार्यकर्त्ता, गाधीवादी विचारों के सर्वोत्कृष्ट प्रतिपादक एवं उन्हें व्यवहार में उतारने वाले व्यक्तित्व को स्मरण करने के

उद्देश्य से मध्यप्रदेश सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान, उज्जैन "**आचार्य जे.बी. कृपलानीः जीवन, दृष्टि एवं स्वतंत्रता संग्राम से लेकर लोकतान्त्रिक भारत में भूमिका"** विषय पर दो दिवसीय सेमिनार (दिनांक 14 एवं 15 दिसम्बर, 2017) का आयोजन कर रहा है।

सेमिनार के प्रस्तावित उपशीर्षक इस प्रकार है –

- राजनीतिक विचार एवं कार्यवाही में आचार्य जे.बी. कृपलानी का योगदान।
  (Acharya Kripalani's contribution to political thought and action)
- आचार्य कृपलानी एवं रचनात्मक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका।
  (Acharya Kripalani and his role in promoting constructive programme)
- आचार्य कृपलानी की भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका।
  (Acharya Kripalani in freedom struggle of India)
- स्वतंत्रता के पश्चात आचार्य कृपलानीः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष, अद्वितीय संसदीय एवं विपक्ष के नेता के रूप में उनके कार्य एवं भूमिका।
  (Acharya Kripalani in post Independent India: As Congress President, unique Parliamentarian and leader of opposition)
- सार्वजनिक जीवन मे आचार्य कृपलानी की भूमिका।
  (Acharya Kriplani's role in public life)
- कृपलानी के गांधी एवं गांधी के कृपलानी।
  (Kripalani's Gandhi and Gandhi's Kripalani)
- सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से अन्य विषय।
  (Other relevant themes from social, economic & political perspectives)

इस सेमिनार हेतु उक्तांकित विषयवस्तु एवं मुद्दों पर शोध पत्र आमंत्रित हैं। चयनित शोध पत्रों के लेखकों को सेमिनार भाग लेने हेतु आमंत्रित किया जाएगा। सेमिनार में भाग लेने हेतु यात्रा व्यय संस्थान द्वारा वहन किया जायेगा तथा आवास एवं अन्य व्यवस्थाएँ भी संस्थान द्वारा की जायेगी।

शोध संक्षेपिका (Abstract) **भेजने की अंतिम तिथि : 28 नवम्बर, 2017**
सम्पूर्ण शोध पत्र (4000–6000 शब्द) भेजने की अंतिम तिथि : 02 दिसम्बर, 2017

(शोध संक्षेपिका एवं शोध पत्र निर्धारित तिथि के पूर्व ई–मेल mailboxmpissr@gmail.com **पर प्रेषित करे)**

डॉ. आशीष भट्ट
सेमिनार संयोजक
09424511516
(drabhatt@yahoo.com)

डॉ नलिनसिंह पवांर
सेमिनार समन्वयक
09406828289
(nalinsinghpanwar@gmail.com)

प्रोफेसर यतीन्द्रसिंह सिसोदिया
निदेशक

म.प्र. सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान

6, प्रोफेसर रामसखा गौतम मार्ग
भरतपुरी प्रशासनिक प्रक्षेत्र, उज्जैन – 456 010 (म. प्र.)
फोनः 0734–2510978, फैक्सः 0734–2512450, ईमेलः mpissr@yahoo.co.in
http://www.mpissr.org